ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

प्राचिन सरस्वती नदी का विलूप्त होना और खोज

KEY WORDS: सरस्वती, यमूना, सतलज, गंगा, सिंधू, आदिबद्री

राजेश सोनकुसरे

सहायक प्राध्यापक (इतिहास) महर्षि शरद पवार कला व वाणिज्य महाविद्यालय रा.स.तु.म. नागपुर विद्यापीठ, नागपूर

ABSTRACT

सरस्वती नदी का उल्लेख सर्वप्रथम प्रचिन हिंदू ग्रंथ ऋग्वेद मे पवित्र नदी के रूप मे किया गया है। सरस्वती नदी का उगम हिमालय के आदिबद्री नामक स्थान से हुआ। ई.पू. 3000 मे सरस्वती नदी विलूप्त हो गयी। सरस्वती नदी के विलूप्त होनेका प्रमूख कारण भूगर्भीय हलचल और भूकंप का आना था। जिसके कारण सरस्वती नदी की उपनदीयों का प्रवाह मार्ग बदल गया।

भारतीय भूगर्भशास्त्र विभाग तथा इसरो के प्रयासो से आज सरस्वती नदी का अस्तित्व था, यह प्रमाण वैज्ञानिकोने खोज निकाले। और इस पवित्र प्राचिन सरस्वती नदी के बारे मे अधिक जानकारी प्राप्त हो सकी।

सरस्वती नदी के बारे मे प्राचिन मान्यताए:

सरस्वती नदी का उल्लेख सर्वप्रथम प्रचिन हिंदू ग्रंथ ऋग्वेद मे किया गया है। ऋग्वेदमे सरस्वती नदी को सबसे पवित्र नदी कहा गया है। ऋग्वेद मे सरस्वती नदी का अन्नवती तथा उदकवती के रूप मे वर्णन किया गया है। सरस्वती नदी प्राचिन काल मे सर्वदा जल से भरी रहती थी और इसके किनारे अन्नकी प्रचूर उत्पत्ती होती थी।

सरस्वती नदी की उत्पत्ती:

सरस्वती नदी की उत्पत्ती हिमालय के आदिबद्री नामक स्थान से हुइ है। सरस्वती नदी हरियाना, राजस्थान व गुजरात से प्रवाहीत होकर कच्छ के रण मे अरब सागर मे विलीन होती थी।

सरस्वती नदी को अनेक उपनदिया और नाले मिलते थे। यमूना और सतलज नदीया सरस्वती नदी की प्रमुख उपनदीया थी। यमूना नदी जीसकी उत्पत्ती हिमालय से हुई थी और जो आज गंगा नदीकी प्रमुख उपनदी है, प्राचिन काल मे सरस्वती नदी की एक प्रमुख उपनदी थी। साथ मे ही सतलज नदी जीसकी उत्पत्ती भी हिमालय से हुई थी और जो आज सिंधू नदीकी प्रमुख उपनदी है, प्राचिन काल मे सरस्वती नदी की दुसरी प्रमुख उपनदी थी।

सरस्वती नदी और उसकी उपनदीयोंकी उत्पत्ती हिमालय पर्वत से होने के कारण इन नदीयों मे हिमालय के हिमनद(ग्लेशीयर) से सालभर सर्वदा जल प्राप्त होता था। इसी कारण से सरस्वती नदीका पात्र विस्तारीत व सदा जलसे भरा रहता था। सरस्वती नदी सदा जल से भरी होने के कारण नदी के किनारे अन्न धान्य (खेती) उत्पत्ती अधिक व सर्वदा होती थी। इन परिस्थीतीयों के कारण ही सरस्वती नदी व उसकी उपनदीयोंके किनारे सिंधू संस्कृती की सर्वाधीक बस्तीया बसी थी।

सरस्वती नदी का विलूप्त होना:

ऐसा कहा जाता है की सरस्वती नदी उत्तर वैदिक काल मे विलूप्त हो गयी। इस जगह को विनशन कहा जाता है। वैज्ञानिकों के मतानूसार भूगर्भीय हलचल और बदलाव के कारण सरस्वती नदी इ.पू. 3000 के करीब विलूप्त हो गयी। भूस्तरीय बदलाव के कारण सरस्वती नदी की प्रमुख उपनदीया यमुना और सतलज का प्रवाह मार्ग बदल गया। यमूना नदी पूर्व की ओर बहना शुरू हो गयी और गंगा नदी मे विलीन हो गयी। उसी प्रकार सतलज नदी पश्चिम की ओर बहना शुरू हो गयी और सिंधू नदी मे विलीन हो गयी।

इस प्रकार सभी उपनदीया अपना प्रवाह मार्ग बदलने के कारण सरस्वती नदी विलूप्त हो गयी।

सरस्वती नदी का सिंधू/हडप्पा सभ्यता मे योगदान:

प्राचिन काल मे दुनिया की एक प्राचिन सभ्यता रही सिंधू घाटी सभ्यता भारत के उत्तर पश्चिम भाग से शूरू होकर आज के पाकिस्तान तक फैली थी। इस सभ्यता के बस्तीयों की खोज सर्वप्रथम सिंधू नदी के किनारे हुई। इसलिए इसे सिंधू सभ्यता कहा जाता है।

परंतू आज तक खोजी गयी सिंधू सभ्यता की 1400 से ज्यादा बस्तीयो मे से 1100 बस्तीया सरस्वती नदी के किनारों पर ही प्राप्त हुई है।

इसी लिए जब सरस्वती नदी विलूप्त हो गयी। उसी के साथ सरस्वती नदी के किनारोपर बसी बस्तीयोंका भी विनाश हो गया। सरस्वती नदी का विलूप्त होना यह भी सिंधू सभ्यता के विनाश का एक कारण था।

विलूप्त सरस्वती नदी की खोज:

भारतीय पूरातत्व सर्वेक्षण विभाग की ओर से 2002 से 2004 और 2009 से 2014 मे हरियाना मे आदिबद्री, कुरूक्षेत्र, फतेहाबाद, हिसार, राजस्थान मे गंगानगर, हनूमानगढ, करणपूरा तथा गुजरात मे खिरमारा, कच्छ मे उत्खनन (खुदाई) किया गया। यहीपर सरस्वती नदी के अस्तीत्व के सबूत भी प्राप्त हुए।

जैसलमेर के आजूबाजू खोज करनेपर वहा के स्थानिक लोगों द्वारा पता चला की **रानाऊ** के पास वाले गाव की जमिन मे कभीभी पानी की कमी नही रहती। इतनाही नही वहा के कुओंसे हमेशा मीठा पानीही प्राप्त होता है। जबकी बाकीके गावों के कुओं मे खारा पानी है।

इसरो ने की गयी खोज के अनूसार सरस्वती नदी के प्राचिन प्रवाह रेखा पर आज घघ्घर नदी बहती है। और यही सरस्वती नदी का असली प्रवाह मार्ग था।

इसके अलावा सरस्वती नदी के प्रवाह मार्ग के आजूबाजूवाले 14 कुओं के पानी का "कार्बन डेटिंग" पद्धती द्वारा अध्ययन किया गया। इससे यह जानकारी प्राप्त हुई की यह पानी 8 हजार से 14 हजार साल पूराना है। सरस्वती नदी के मार्ग पर आज भी जो बस्तीया है वहा साल भर जल की कभी कमी नही रहती और आसपास के पेडपौधे भी सालभर हरेभरे रहते है। सरस्वती नदी का प्रवाह मार्ग जो राजस्थान से जाता है, वहा सालाना 15 सेंटीमीटर ही बरसात होती है। फिरभी इस प्रवाह मार्ग के आसपास वाले गावों मे सालभर कुओंमे पानी रहता है।

जयपूर के "केन्द्रीय रूक्ष प्रदेश संशोधन संस्था" ने अध्ययन के आधार पर कहा है की "सरस्वती नदी" प्राचिन काल मे अस्तित्व मे थी।

निष्कर्ष:

प्रचिन समय सरस्वती नदी बडे रूप मे हरियाना, राजस्थान और गुजरात इन राज्योसे बारबार अपना मार्ग बदलती हुइ कच्छ के रण मे अरब सागर मे विलीन होती थी। इसी नदी के तट पर हडप्पा/सिंधू सभ्यता का अस्तित्व फलफूल रहा था। यमूना और सतलज जैसी नदिया सरस्वती नदी की प्रमूख उपनदिया थी।

इ.पू. 3000 के करीब मे भूगर्भीय हलचल के कारण यमूना और सतलज नदियोंके मार्ग बदल गये। यमूना नदी, गंगा नदी मे तथा सतलज नदी, सिंधू नदी मे विलीन हो गयी। इसी कारण से सरस्वती नदी विलूप्त हो गयी और सरस्वती नदीका विलूप्त होना यह सिंधू सभ्यता के विनाशका एक कारण था।

भारतीय भूगर्भशास्त्र विभाग तथा इसरो जैसी सरकारी संस्थाओने उत्खनन और अभ्यास के द्वारा सरस्वती नदी का अस्तित्व होने के प्रमाण पेश किये है।

संदर्भ सूची:

1. एक थी नदि सरस्वती — खड्ग सिंह बल्दिया
2. सरस्वती बह रही है — प्रो.बी. बी. लाल.
3. सरस्वती सभ्यता — जी. डी. बक्षी
4. The Lost River — Michel Danino
5.लूप्त सरस्वती नदीचा शोध — वि.श्री.वाकणकर